का. सुनीति कुमार घोष को लाल सलाम!

वयोवृद्ध कम्युनिस्ट क्रांतिकारी का. सुनीति कुमार घोष का 11 मई 2014 को आसनसोल (पश्चिम बंगाल) में 96 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

वे नक्सलबाड़ी उभार के बाद बनी कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की अखिल भारतीय तालमेल कमेटी (AICCCR) और 1970 में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) की आठवीं (पहली) कांग्रेस में चुनी गयी केन्द्रीय कमेटी के सदस्य थे। वे लिबरेशन मासिक मुखपत्र के सम्पादक थे।

उनका राजनीतिक जीवन तेभागा आंदोलन में हिस्सेदारी करने से शुरू हुआ था। कम्युनिस्ट होने के चलते उन्हें बार-बार अपनी अध्यापक की नौकरी छोड़नी पड़ती थी। 1956 में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस में संशोधनवादी दिशा अपना लेने के बाद उसी वर्ष उन्होंने भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। 1964 में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के गठन के बाद वे थोड़े दिनों तक उसके सदस्य थे, लेकिन नक्सलबाड़ी उभार के पहले ही उन्होंने इसकी नव-संशोधनवादी दिशा को समझकर इससे इस्तीफा दे दिया।

का. सुनीति कुमार घोष ने का. चारू मजूमदार की आतंकवादी कार्यदिशा से 1972 के शुरू से ही अपने को अलग कर लिया था। का. चारू मजूमदार की 28 जुलाई 1972 में पुलिस लॉकअप में मौत के बाद उन्होंने भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) को पुनर्गठित करने की कोशिश की। इसी उद्देश्य से उन्होंने 1967-72 का एक समाहार तैयार किया था, जो मूलतया क्रांतिकारी जनदिशा पर आधारित था। यही समाहार पुनर्गठित भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माले) के पुनर्गठन का आधार बना था। लेकिन उस समय तक भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) कई हिस्सों में बंट चुकी थी और यह पुनर्गठित भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) भी उनमें से एक थी।

अतः भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) के सभी ग्रुपों को एकजुट करने के उद्देश्य से फरवरी, 1974 में केन्द्रीय सांगठनिक कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) का गठन किया गया जिसमें का. सुनीति कुमार घोष ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

यह दीगर बात है कि तमाम प्रयासों के बाद उस पार्टी का पुनर्गठन नहीं किया जा सका। और खुद अपने आंतरिक अंतर्विरोधों के चलते केन्द्रीय सांगठनिक कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) में मई 1977 में फूट पड़ गयी।

का. सुनीति कुमार घोष ने कुछ दिनों तक केन्द्रीय सांगठनिक कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) के अपने धड़े को जीवित रखा। लेकिन, 1978 के बाद वे भारतीय क्रांति की समस्याओं का अध्ययन करने में लग गये और आजीवन उसी में लगे रहे।

का. सुनीति कुमार घोष आजीवन मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा पर दृढ़ता से खड़े रहे।

का. घोष वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने का. चारू मजूमदार की मौत के बाद पार्टी कार्यकर्ताओं तक, वीरभूम रिपोर्ट उपलब्ध करायी। यह वह रिपोर्ट थी जिसमें व्यवहारिक स्तर पर अनुभवों के आधार पर आतंकवादी कार्यदिशा का विरोध किया गया था और जिसे भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) के नेतृत्व ने दबा दिया था। का. घोष ने बिरादराना चीन की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा दी गयी सलाहों की आधिकारिक सोरेन बसु रिपोर्ट को भी पार्टी कार्यकर्ताओं तक पहुंचाया।

का. घोष दृढ़ता से अपने विचारों को रखते थे और 1978 के बाद की उनकी लिखी पुस्तकें आज भी भारत को अर्द्ध-सामंती अर्द्ध-औपनिवेशिक मानने वाले संगठनों के लिए संदर्भ ग्रंथ बनी हुई हैं।

का. घोष की यह विचारधारात्मक प्रतिबद्धता और अपने राजनीतिक दृष्टिकोण पर दृढ़ता आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत का काम करेंगी।

अगर आने वाली पीढ़ियां उनके इन गुणों को अपनाने के साथ मनोगतवादी कमजोरियों को छोड़कर और लेनिनवादी सांगठनिक उसूलों के आधार पर अपने पार्टी जीवन को संचालित करने पर जोर दें तो वे का. सुनीति कुमार घोष के भारत के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन को एकजुट करने के उनके और तमाम पुराने कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के सपनों को निश्चित तौर पर पूरा करने के लिए अपने को समर्पण भाव से लगाने में सफल होंगी।

का. सुनीति कुमार घोष को लाल सलाम!
मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा जिंदाबाद!!
भारतीय क्रांति अमर रहे!!!

पुनर्गठन कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट लीग (मार्क्सवादी-लेनिनवादी)